ग्रन्थमाला ‘गुरु’ : खण्ड २

गुरु के प्रकार एवं गुरुमन्त्र

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापना के उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

卐 सनातन के ग्रन्थों की भारत की भाषाओं के अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४५, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९९, हिन्दी १९६, गुजराती ६८, तेलुगु ५४, तमिल ४४, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

सितम्बर २०२४ तक ३६६ ग्रन्थों की १३ भाषाओं में ९७ लाख ५९ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थ के संकलनकर्ताओं का परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजी के आध्यात्मिक शोधकार्य का संक्षिप्त परिचय

१. 'ईश्वरप्राप्ति हेतु कला' के विषय में मार्गदर्शन एवं संगीत, नृत्य आदि कलाओं के सात्त्विक प्रस्तुतीकरण सम्बन्धी शोध

२. आचारपालन के कृत्य, धार्मिक कृत्य एवं बुद्धि-अगम्य घटनाओं का वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा शोध

३. शारीरिक एवं मानसिक तथा अनिष्ट शक्तियों की पीडाओं की उपचार-पद्धतियों के विषय में शोध

४. २०.९.२०२४ तक २ बालक-सन्तों को, तथा ६० प्रतिशत से अधिक आध्यात्मिक स्तर प्राप्त २१५ और अन्य ९०६ दैवी बालकों को समाज से परिचित करवाया । दैवी बालकों के विषय में शोध-कार्य भी जारी है ।

५. अपनी (सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी की) देह तथा उपयोग की वस्तुओं में हो रहे दैवी परिवर्तनों सम्बन्धी शोधकार्य और अपने महामृत्युयोग का शोधकार्य की दृष्टि से अध्ययन

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

(कुछ अन्य सूत्र [मुद्दे] '*' चिह्न से दर्शाए हैं ।)

१. गुरु के प्रकार ८

* रूपानुसार प्रकार एवं गुरु न होना ८
* गुरु, सद्गुरु एवं परात्पर गुरु १०
* नाम ही गुरु है २३
* गुरु के सगुण रूप की अपेक्षा निर्गुण रूप श्रेष्ठ २३
* ढोंगी अथवा अनाधिकारी गुरु २३

२. गुरु के लक्षण २६

* ज्ञानी २६
* शिष्य को ज्ञान देने की उत्कण्ठा २७
* शिष्य द्वारा साधना करवाने की क्षमता ३३

३. गुरुदीक्षा, अनुग्रह, गुरुवाक्य एवं गुरुकुंजी ३६

४. गुरुमन्त्र ४०

* अर्थ * महत्त्व ४०

* दूसरों का नामजप (साधना) आरम्भ करवाने हेतु गुरु में आवश्यक घटक ४३
* नाम देनेवाले का आध्यात्मिक स्तर एवं नामान्तर्गत शब्दों का महत्त्व ४३
* गुरुमन्त्र सम्बन्धी भ्रान्तियां ४४
* गुरु द्वारा दिए गुरुमन्त्र का सामर्थ्य ४९
* गुरुमन्त्र एक ही गुरुतत्त्व से मिलना ५०
* गुरुमन्त्र देने से गुरु की शक्ति न घटना ५१
* 'गुरुमन्त्र गुप्त रखना चाहिए', ऐसा क्यों कहते हैं ? ५२

५. गुरुचरित्र ५४

५ अ. गुरुमहिमा ५४
५ आ. गुरुमन्त्र ५४
५ इ. गुरुभक्ति का महत्त्व ५४
५ ई. गुरुसेवा एवं गुरुकृपा ५४

६. गुरुगीता ५५

६ अ. श्री गुरुगीता का महत्त्व ५५
६ आ. 'गुरु' शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ ५५
६ इ. गुरु का वर्णन ५५
६ ई. गुरु का महत्त्व ५६
६ उ. शिष्य ५८
६ ऊ. फल ५९

卐 संकलनकर्ताओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य जानकारी ६२

भूमिका

शिष्य के जीवन में गुरु का महत्त्व अनन्यसाधारण है; क्योंकि गुरु के बिना उसे ईश्वरप्राप्ति हो ही नहीं सकती । कोई किसी ग्रन्थ को, तो कोई ध्वज को गुरु मानते हैं; परन्तु देहधारी गुरु ही शिष्य को सर्वंकष ज्ञान दे सकते हैं । गुरु के रूपानुसार प्रकार एवं उनके कार्य के स्वरूप का विवरण इस ग्रन्थ में दिया है । उससे देहधारी गुरु का महत्त्व ज्ञात होगा ।

सामान्यजनों को यह ज्ञात नहीं होता कि गुरु, सद्गुरु एवं परात्पर गुरु में आध्यात्मिक स्तरानुसार भेद होता है । यह भेद भी इस ग्रन्थ में दिया गया है । ढोंगी गुरु को कैसे पहचानें ? खरे गुरु के क्या लक्षण हैं ? गुरुमन्त्र से सम्बन्धित अनुचित धारणाएं कौनसी हैं ? वास्तविक गुरुमन्त्र कौनसा होता है ? आदि मार्गदर्शन भी इस ग्रन्थ में प्रस्तुत है ।

इस ग्रन्थ में किए गए मार्गदर्शन से जिज्ञासुओं का साधकों में, साधकों का शिष्यों में तथा शिष्यों का रूपान्तरण गुरु में हो, यह श्री गुरु के चरणों में प्रार्थना है ! – **संकलनकर्ता**

---

१. अध्यात्म सम्बन्धी सर्व ग्रन्थों की सामायिक भूमिका 'धर्म का मूलभूत विवेचन' ग्रन्थ में दी है ।

२. ग्रन्थ में साधकों द्वारा किए लेखन में अथवा उनकी अनुभूतियों में 'प.पू. डॉक्टर'का उल्लेख ग्रन्थ के संकलनकर्ता परात्पर गुरु डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजी के विषय में है ।

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी की उत्तराधिकारिणियों की उपाधि सम्बन्धी विवेचन !

जीवनाडी-पट्टिका वाचन द्वारा सप्तर्षि ने की आज्ञा के अनुसार १३.५.२०२० से सद्गुरु (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजी को 'श्रीसत्शक्ति' एवं सद्गुरु (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळजी को 'श्रीचित्शक्ति' सम्बोधित किया जा रहा है ।